धर्म, संस्कृति एवं समाज की नैसर्गिकता व द्वन्द्व

डॉ0 अनुराग पाण्डेय

धर्मों का आदिम व सरलतम कारण हमारा मनुष्य होना तथा परिणामतः रहन–सहन है। हम मनुष्य हैं, अतः हमारे रहन–सहन तथा पारस्परिक अन्तर्क्रियाओं का एक सभ्य अथवा उससे भी अधिक, व्यापक आदर्शमूलक ढंग है जो हमारी संस्कृति का निर्माण करता है। इस संस्कृति के अन्तर्गत हमारी भाषा, व्यवहार, जगत–विषयक दृष्टिकोण, नैतिकता तथा संगठन व पवित्र स्थानादि आते हैं। इनकी अक्षुण्णता को बनाए रखना ही परम्परा है तथा परम्परा के मूल को ध्यान में रखते हुए इनमें समयानुसार बदलाव लाना ही आधुनिकता का प्रतीक।